माहे रबीउल अव्वल का तकाज़ा किया है

मुफ्ती तकी उस्मानी दब.

इस्लाही खुतबात/२३ उर्दू से मजमून का खुलासा लिप्यान्तरण किया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

हज़रत उमर (रदी) एक मर्तबा अपने साथियो के साथ एक पहाड के दमन से गुज़र रहे थे उस वक्त वो अमीरुल मोमिनीन थे.

'अमीरुल मोमिनीन' का मतलब ये है के इस वक्त के एतेबार से तकरीबन आधी दुन्या के हुकमरान थे यानि जो इलाका उनकी हुकूमत में था आज इसमें काम-आज काम ५० हुकूमते काइम है इतनी बडी उनकी हुकूमत थी पहाड के दमन में ज़रा देर के लिए रुक गए और खुद अपने आप से खिताब कर के फरमाया - ऐ खत्ताब के बेटे ज़रा ठहर और देख ये वो पहाड है जिसके दमन में तू 'ऊँट' चराया करता था और तेरे पाव 'ऊँटो' के पेशाब से तर रहते थे तेरी ये अवकात थी और आज तू आधी दुन्या का हुक्मरान है ज़रा सोच तेरी

ज़िन्दगी में ये अज़ीम इन्किलाब किस ने पैदा किया? ये किस का सदका है? फिर खुद ही जवाब दिया के ये सदका है नबी करीमﷺ की सोहबत का जिसके नतीजे में तुझ जैसा 'ऊँट' चराने वाला आज आधी दुन्या का हुकमरान बना हुवा है.

२३ साल के आरसे में नबी करीमﷺ ने कैसा इन्किलाब पैदा फरमाया अखलाक में इन्किलाब अमल में इन्किलाब, सोच में इन्किलाब, फिक्र में इन्किलाब, सिर्फ २३ साल की मुद्दत में आज वही सीरते तैय्यबा हमारे पास भी है इसका हम तज़किरा भी करते है लेकिन हमारी ज़िन्दगी में क्यों इन्किलाब नहीं आता? हमारी ज़िन्दगियों में तबदीली क्यों नहीं आती? हमारे अमल में अखलाक में हमारी फिक्र और सोच में इन्किलाब क्यों नहीं आता? ये एक लम्हे फिक्रिया है जिसके बारे में हमे सोचना है खुत्बे में जो आयत है उस आयत में इसका जवाब मौजूद है चुनांचे फरमाया तर्जुमा - इतनी बात काफी नहीं तुम नबी करीमﷺ की शान में मढिया

कसीदे पढलो ये बात काफी नहीं बल्कि नबी करीमﷺ की हयाते तैय्यबा को इस निय्यत से पढो सुनो और सुनाओ के इसको हम अपनी ज़िन्दगी के लिए एक मिसाल और नमूना समझेंगे और इसकी नकल उतरने की कोशिश करेंगे बेहतरीन नमूना है तुम्हारे लिए नबी करीमﷺ की ज़िन्दगी में.

अगर तुम हाकिम हो तो तुम्हारे लिए बेहतरीन मिसाल मदीना तैय्यबा के उस हाकिम की है जिस ने चन्द सालो में जज़ीरे अरब में इस्लाम का झंडा लहरा दिया. और अगर तुम दोस्त हो तो तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना हज़रत अबू बकर (रदी) और हज़रत उमर (रदी) के दोस्त में है.

और अगर तुम शोहर हो तो तुम्हारे लिए हज़रत आयेशा हज़रत खदीजा, हज़रत उम्मे सलमा और हज़रत मैमुना (रदी) के शोहर की ज़िन्दगी नमूना है उनके शोहर ने उनके साथ केसा 'बर्ताव' किया?

अगर तुम एक ताजिर हो तो तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है उस मुहम्मदﷺ की हयाते तैय्यबा में है जो तिजारत के लिए मुल्के शाम गए थे जिस का शरीके सफर 'मेसरा' कहता है के ऐसा शरीके सफर न में ने पहले कभी देखा है न बाद में.

अगर तुम मज़दूर हो मुलाज़िम हो या पेशावर हो तो तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है वो मज़दूर जो हिजाज़ की पहडियो में बकरिया चराया करता था.

और अगर तुम 'काश्त-कार' हो तो तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है उस 'काश्त-कार' में जिसने मकामे 'जुरूफ' में ज़मीन में 'काश्त-कारी' की थी गरज़ ज़िन्दगी का कोई गोशा ऐसा नहीं जिस में अल्लाह ताला ने नबी करीमﷺ की ज़िन्दगी का बेहतरीन नमूना न छोडा हो.

नबी करीमﷺ की ज़िन्दगी और आप के दुन्या में आने का हकीकी मकसद ये है के लोग नबी करीमﷺ की ज़िन्दगी को

देखे और उसकी नकल उतरने की कोशिश करे जिस्म से लेकर रूह तक ज़िन्दगी में जितने भी मौके है उसमे हम हयाते नबी करीमﷺ से हिदायत लेने की कोशिश करे.

अगर हम ‘रबीउल अव्वल’ में यही जज़्बा पैदा कर लिया करे तो यकीनन हमारी ज़िन्दगियों में इन्किलाब आजाएगा.

‘रबीउल अव्वल’ का महीना आएगा और खतम हो जाएगा ज़रा हम इस बात का ‘जायज़ा’ ले के नबी करीमﷺ का नाम तो बहुत लिया लेकिन नबी करीमﷺ की वो कौन सी सुन्नत है जो हम ने अपनाई है कभी जायज़ा ले कर देखा? कभी गरेबान में मुँह डाला? कभी फेहरिस्त बनाई क्या-क्या सुन्नते है नबी करीमﷺ की? कितनी सुन्नतों पर हम ने अमल किया और कितनी सुन्नतों पर नहीं किया? आज सब से पहले में अपने आप को उसके बाद आप हज़रत को दावत देता हु के अल्लाह के लिए नबी करीमﷺ की ‘बेसत’ के मकसद को समझते हुवे एक काम ये करे के अपना जायज़ा ले कर देखे क्या क्या सुन्नते है नबी करीमﷺ की सुबह से शाम तक की

ज़िन्दगी में जिन पर मेरा अमल नहीं है उन पर आज ही से अमल करने की कोशिश करे.

इसके लिए हवाला दूंगा अपने शेख अब्दुल हाई आरफी (रह) की किताब 'उस्वाए रसूलए अकरमﷺ' का इस में मेरे शेख ने नबी करीमﷺ की वो सुन्नते जमा कर दी है जो अहादीस से साबित है सुबह से शाम तक की ज़िन्दगी के मुख्तलिफ शोबो में नबी करीमﷺ की क्या क्या सुन्नते थी इनको पढते जाइये और अपना जायज़ा लेते जाइये जहा कमी हो इसको पूरा करने की कोशिश कीजिए.

देखिए नबी करीमﷺ की बहुत सी सुन्नते ऐसी है जिन पर फौरन अमल कर लेने में कोई दुश्वारी नहीं कोई पैसा नहीं खर्च होता कोई वक्त नहीं लगता कोई मेहनत नहीं लगती लेकिन सिर्फ गफलत की वजह से हम ने इनको छोडा हुवा है एक छोटी सी मिसाल देता हु नबी करीमﷺ की सुन्नत ये है के बैतूल खला जाते वक्त पहले बया पाव अंदर दाखिल करते और निकलते वक्त पहले दया पाव बहार निकलते

अगर कोई शख्स इसका एहतेमाम करे तो क्या दुश्वारी है? कोई पैसा खर्च होता है? कोई वक्त लगता है? कोई तकलीफ नहीं होती? मगर सिर्फ ध्यान की बात है इन सुन्नतों पर इस लिए अमल कर लिया करे के नबी करीमﷺ इन पर अमल करते थे.

जिस वक्त आप सुन्नतों पर अमल कर रहे होंगे तो उस वक्त आप अल्लाह ताला के महबूब होंगे सुरे आले इमरान/३१ तर्जमा - आप फार्मा दिज्ये के अगर तुम अल्लाह ताला से मुहब्बत रखते हो तो तुम लोग मेरी 'इत्तिबा' करो अल्लाह ताला तुम से मुहब्बत करने लगेंगे.

अब बताइये कितनी अज़ीम सआदत सिर्फ बेपरवाही की वजह से जाए हो रही है मस्जिद में दाखिल होते और निकलते वक्त बया पाव पहले बहार निकालो तो इसमें क्या दुश्वारी है क्या 'मशक्कत' है? मगर गफलत और लापरवाही है जिस की वजह से हम ने इसको छोडा हुवा है

बहुत सी ऐसी सुन्नते जिन में कोई वक्त नहीं लगता सिर्फ लापरवाही की वजह से छुट्टी हुवी है.

इसी तरह बहुत से ऐसे अमल है जिन में मेहनत की ज़रुरत नहीं है बल्कि मुख्तसर ध्यान और तवज्जुह की ज़रुरत है जिस से हमारे तमाम अमल सुबह से ले कर शाम तक सुन्नत के सांचे में ढल जाएंगे और हर हर कदम पर नेकी लिखी जाएगी.

मेरी आखरी गुज़ारिश है के 'रूहे ज़मीन' में इस वक्त 'इत्तिबाए सुन्नत' से बढकर कोई कोई अमल नहीं और अगर कोई सुन्नत ऐसी हो जिस पर आदमी अमल नहीं कर सकता तो अल्लाह ताला से दुआ करे के या अल्लाह मुझे इस सुन्नत पर अमल करने में दुश्वारी हो रही है या अल्लाह आप मुझे तौफीक और हिम्मत अत फार्मा दिज्ये अगर ये काम हम कर लेंगे तो 'रबीउल अव्वल' का महीना बडा कामयाब गुज़रेगा और अगर सारा महीना गुज़र दिया और अमल कुछ न किया

तो 'रबीउल अव्वल' का महीना कामयाब न रहा दर असल शैतान हमे बहकता रहता है के अभी तो उमर पडी है बाद में अमल कर लेंगे इस पर वो टालता रहता है यहाँ तक के आदमी पर आखरी वक्त आजाता है और फिर अफसोस होता है इस से पहले के वो वक्त आजाए.

अल्लाह ताला हम सब को अमल करने की तौफीक अता फरमाए और हमे तमाम सुन्नतों पर अमल करने वाला बनाए आमीन.